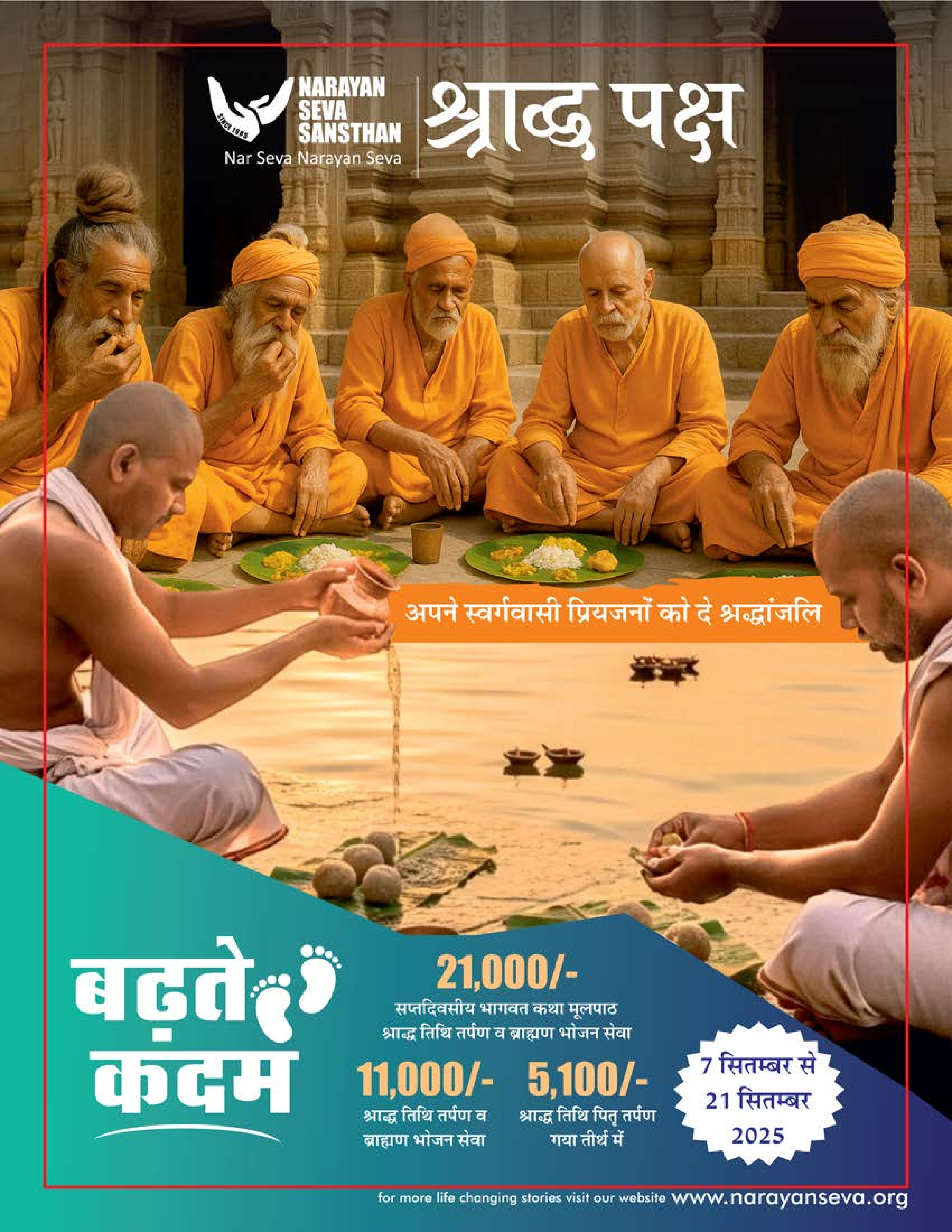
NARAYAN SEVA SANSTHAN
SINCE 1985
Nar Seva Narayan Seva
श्राद्ध पक्ष
अपने स्वर्गवासी प्रियजनों को दे श्रद्धांजलि
बढ़ते कदम
21,000/-
सप्तदिवसीय भागवत कथा मूलपाठ
श्राद्ध तिथि तर्पण व ब्राह्मण भोजन सेवा
11,000/-
श्राद्ध तिथि तर्पण व
ब्राह्मण भोजन सेवा
5,100/-
श्राद्ध तिथि पितृ तर्पण
गया तीर्थ में
7 सितम्बर से
21 सितम्बर
2025
for more life changing stories visit our website www.narayanseva.org

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Nar Seva Narayan Seva

नारायण सेवा संस्थान, न केवल भारत में बल्कि विश्वभर में मानव सेवा को समर्पित एक प्रमुख गैर–सरकारी संगठन है। इसकी स्थापना 1976 में पूज्य श्री कैलाश 'मानव' जी की करुणा और सेवा–भावना से हुई। संस्थान का विधिवत पंजीकरण 23 अक्टूबर 1985 को 'नर सेवा ही नारायण सेवा' के ध्येय वाक्य के साथ हुआ।

प्रारंभ में रोगियों और उनके परिचारकों के लिए भोजन सेवा से शुरू होकर, संस्थान ने आदिवासी और गिरिवासी क्षेत्रों में अनाज, सत्तू, दवाइयां और वस्त्र वितरण जैसे सेवा कार्य आरंभ किए। वर्ष 1997 में मुंबई के समाजसेवी श्री चैनराज सांवतराज जी लोढ़ा के सहयोग से 'मानव मंदिर' के नाम से दिव्यांगजनों के लिए एक विशेष अस्पताल की स्थापना हुई, जहां पहले मात्र 10–20 ऑपरेशन प्रतिदिन होते थे। आज, दानवीरों और समाज के सहयोग से प्रतिदिन 90–100 निःशुल्क ऑपरेशन किए जा रहे हैं, और अब तक 4,48,537 बच्चों एवं युवाओं को दिव्यांगता से मुक्ति मिल चुकी है।

संस्थान में प्रतिदिन 300–400 रोगी देशभर से जन्मजात पोलियो करेक्टिव सर्जरी के लिए आते हैं। एक्स–रे, लेब टेस्ट, दवाइयां, भोजन एवं 1100 रोगियों और परिजनों के निःशुल्क आवास की सुविधा उपलब्ध है। एक समय में लगभग 3000 लोग भोजन करते हैं। ऑपरेशन के बाद दिव्यांगजनों को ट्राईसाइकिल, व्हीलचेयर, कैलीपर्स आदि निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं। अब तक 37,967 लोगों को कृत्रिम अंग लगाए जा चुके हैं।

संस्थान आर्थिक पुनर्वास के लिए दिव्यांगजनों को सिलाई, मोबाइल रिपेयरिंग, मेहंदी जैसे प्रशिक्षण निःशुल्क देता है। निर्धन एवं दिव्यांग जोड़ों के लिए हर वर्ष दो बार सामूहिक विवाह समारोह आयोजित किए जाते हैं। अब तक 43 समारोहों में 2,459 से अधिक जोड़े वैवाहिक बंधन में बंध चुके हैं।

संस्थान 1991 से 503 बच्चों के लिए निराश्रित बालगृह का संचालन कर रहा है और नारायण चिल्ड्रन एकेडमी में 2401 आदिवासी एवं ग्रामीण बच्चे अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित हो रहे हैं। समय–समय पर संस्थान नशा मुक्ति जागरूकता अभियान, चिकित्सा शिविर, कथा–ज्ञान यज्ञ एवं सत्संग जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से समाज को जागरूक एवं संस्कारित करने का कार्य करता है। संस्थान का सेवा तंत्र 24X7 कार्यरत है, जिसमें लगभग 1000 सेवाभावी कार्यकर्ता, 20 डॉक्टरों की टीम और 12 अस्पताल सक्रिय रूप से सेवा में लगे हैं। भारत में 480 से अधिक शाखाएं संचालित हो रही हैं और यू.के., यू.एस.ए., ऑस्ट्रेलिया, युगांडा, हांगकांग जैसे देशों में भी संस्थान पंजीकृत है। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना के साथ नारायण सेवा संस्थान विश्वभर में मानव सेवा की प्रेरणा बनकर कार्य कर रहा है।

सेवा श्रेष्ठ संस्कार

पूज्य श्री कैलाश 'मानव'

सेवा और सद्कर्म के प्रति समर्पण सदैव जीवन को सार्थक बनाने की सामर्थ्य देता है। अतएव हमेशा प्रभु से यही प्रार्थना करें कि हममें बुद्धि, विवेक व सेवा के संस्कार हमेशा बनें रहें। जिस व्यक्ति अथवा परिवार में ये संस्कार होंगे, उन पर कभी कोई संकट आ ही नहीं सकता। बौद्ध संघ के एक भिक्षु को कोई गंभीर रोग हो गया। उसकी हालत इतनी खराब हो गई कि वह चल–फिर भी नहीं सकता था और मल–मूत्र में लिपटा पड़ा रहता था। उसकी यह हालत देख उसके साथी भिक्षु भी उसके पास नहीं आते और घृणा से मुंह फेरकर, आसपास से निकल जाते थे। कुछ दिनों बाद बुद्ध को यह बात पता चली तो वे तत्काल अपने प्रिय शिष्य आनंद के साथ उस भिक्षु के पास पहुंचे। उसकी दयनीय दशा से उन्हें घोर कष्ट हुआ। उन्होंने भिक्षु से पूछा– तुम्हें क्या रोग हुआ है? भिक्षु बोला– भगवन ! मुझे पेट की बीमारी है। बुद्ध ने स्नेह से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए प्रश्न किया– क्या तुम्हारी परिचर्या करने वाला कोई नहीं है? भिक्षु के उत्तर देने से पहले ही बुद्ध ने आनंद से कहा– पानी लेकर आओ। हम लोग पहले इसका शरीर स्वच्छ करेंगे। आनंद पानी लेकर आए। फिर बुद्ध ने भिक्षु के शरीर पर पानी डाला और आनंद ने उसके मल–मूत्र को साफ किया। अच्छी तरह धो–पोंछकर बुद्ध ने भिक्षु के सिर को पकड़ा और आनंद ने पैरों को। इस प्रकार उसे उठाकर चारपाई पर लिटा दिया। फिर बुद्ध ने सारे भिक्षुओं को एकत्रित कर उन्हें समझाया– भिक्षुओं ! तुम्हारे माता नहीं, पिता नहीं, भाई नहीं, बहन नहीं जो तुम्हारी सेवा करेंगे। यदि तुम परस्पर एक–दूसरे की सेवा और देखभाल नहीं करोगे तो फिर कौन करेगा? याद रखो, जो रोगी की सेवा करता है, वह ईश्वर की सेवा करता है। बुद्ध का यह सबसे बड़ा संदेश है, जो प्रत्येक देश, काल, परिस्थिति में प्रासंगिक है। सेवा और सद्कर्म के प्रति समर्पण सदैव जीवन को सार्थक बनाने की सामर्थ्य देता है। अतएव हमेशा प्रभु से यही प्रार्थना करें कि हममें बुद्धि, विवेक व सेवा के संस्कार हमेशा बनें रहें। जिस व्यक्ति अथवा परिवार में ये संस्कार होंगे, उन पर कभी कोई संकट आ ही नहीं सकता। दूसरों के कष्ट में उनके साथ खड़े होना और हर संभव मदद करना सर्वोत्तम मानवीय धर्म है। जो इस धर्म का निर्वाह करता है वह श्रेष्ठतम मनुष्य कहलाता है। दीन–हीन, अशक्त, निराश्रित और रोगी के प्रति करुणा व सेवा के भगवान बुद्ध के इस भाव के मुताबिक ही आपके अपने नारायण सेवा संस्थान का भी वही उद्देश्य है। पिछले 40 वर्ष से संस्थान नर को नारायण मान कर सेवा के निःशुल्क प्रकल्पों का आपके सहयोग व समर्थन से संचालन कर रहा हैं। सेवा ही प्रत्येक देश और परिस्थिति में प्रासंगिक और मानव–धर्म है।

सेवा संकल्प 2026: संस्थान के नए लक्ष्य

सेवा बनें स्वभाव

- ऑपरेशन 6500
- फिजियोथेरेपी 50000
- केलीपर 21840
- कौशल प्रशिक्षण 6500
- व्हील चेयर 9300
- ट्राई साईकिल 6100
- कृत्रिम अंग 8500
- आवासीय विद्यालय 100
- अन्न वितरण (कि.ग्रा.) 30043
- नारायण चिल्ड्रन एकेडमी 750 बच्चे
- कम्बल वितरण 5000
- सामूहिक विवाह (जोड़े) 150
- प्राकृतिक चिकित्सा 200
- बैसाखी 15130

गुरू वंदना से महकी गुरूपूर्णिमा

संस्थान के लियों का गुड़ा, सेवा महातीर्थ में 10 जुलाई को गुरु पूर्णिमा महोत्सव गणपति एवं महर्षि वेदव्यास के पूजनोपरान्त संस्थापक पूज्य गुरूदेव श्री कैलाश जी 'मानव' के पाद प्रक्षालन एवं अभिनंदन के साथ उल्लास पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न प्रान्तों से आए संस्थान सहयोगी, शाखाओं के प्रभारी व संस्थान साधक–साधिकाओं की बड़ी संख्या में मौजूदगी रही। कार्यक्रम का देशभर में 'आस्था' चैनल से सीधा प्रसारण हुआ। आयोजन में दिव्यांग बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों व गुरूवंदना की प्रस्तुति दी। जरूरतमंद दिव्यांगों को कृत्रिम अंग, कैलीपर व सहायक उपकरण भी वितरित किए गए। प्रखर शिष्य व अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया जी, ट्रस्टी श्री जगदीश जी आर्य, श्री देवेंद्र जी चौबीसा व निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल ने मानव जी व सहसंस्थापिक श्रीमती कमला देवी जी का पगड़ी, शॉल व उपरणा पहनाकर अभिनन्दन किया। प्रशांत भैया ने कहा कि हमें गुरुदेव ने शुरू से ही सेवा का पाठ पढ़ाया और बताया कि यही सबसे श्रेष्ठ क्षेत्र है, जिसमें जीवन को सार्थक किया जा सकता है। मनुष्य के जीवन निर्माण में गुरु की न केवल प्रभावी भूमिका होती है, बल्कि उनके मार्गदर्शन से भव की समस्त बाधाएं भी हट जाती हैं। पूज्य गुरूदेव ने अपने गुरुदेव गायत्री परिवार के संस्थापक पं. श्रीराम शर्मा आचार्य को नमन करते हुए अपने आशीर्वचन में कहा कि मनुष्य जन्म मिलना कई जन्मों में किए पुण्यों का सुफल है। अतएव परहित का मार्ग कभी नहीं छोड़ना चाहिए। कार्यक्रम का संयोजन महिम जैन ने किया।

महक के जज्बे की जीत

महक की पहली किलकारी ही कठिनाइयों से रुबरु हुई। जन्म से ही उसके दोनों पैर मुड़े हुए थे। जन्मजात वह समाज की दया और सहानुभूति की पात्र थी। गोंडा, (उत्तर प्रदेश) की इस बच्ची को माता–पिता ने तत्काल अस्पतालों में बताया भी लेकिन हर जगह से मालिश की सलाह ही मिली। उम्र बढ़ती रही, कठिनाइयां भी बढ़ती गई। फिर उसे अस्पतालों में बताया जहाँ ऑपरेशन की सलाह के साथ खर्च इतना भारी बताया कि गरीब परिवार के लिए उसे उठाना कतई संभव नहीं था। बच्ची ठीक से चल ही नहीं पाती थी। जब कि वह भी सामान्य बच्चों की तरह दौड़–भाग और खेल–कूद करना चाहती थी। उसकी मासूम आंखों में सपने तो बहुत थे, लेकिन हर कदम पर उसका शरीर उसे निराश कर देता था। एक छोटी बच्ची के लिए यह सब सहना बेहद कठिन था। वह अक्सर मन ही मन सोचती – 'क्या मैं भी कभी दूसरों की तरह अपने पैरों पर चल पाऊंगी?' पर जहां चाह होती है, वहां राह भी बनती है। एक दिन महक के पिता को नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के बारे में जानकारी मिली। यह वह पल था जब डूबती आशाओं को उम्मीदों का किनारा मिला।

महक को लेकर परिवार उदयपुर पहुँचा। संस्थान के विशेषज्ञ डॉक्टरों ने जाँच की और दो चरणों में ऑपरेशन की योजना बनी। करीब 5–6 महीने तक इलाज चला – दो ऑपरेशन, विजिंग, फिजियोथेरेपी और निरंतर देखभाल का लंबा सिलसिला। यह समय महक और उसके परिवार के लिए किसी परीक्षा से कम नहीं था।

लेकिन संघर्ष का अंत एक उजाले में बदला – वह दिन जब महक ने अपने सीधे हुए पैरों पर बिना किसी सहारे के पहला कदम बढ़ाया। उस पल उसकी आंखों से बहते आँसू उसकी तकलीफ के नहीं, बल्कि उसकी सपनो की विजय के प्रतीक थे।

आत्मविश्वास से भरपूर महक कहती है –'अब मैं अच्छे से चल सकती हूँ। नारायण सेवा संस्थान ने मुझे एक नई जिंदगी दी है। मैं दिल से धन्यवाद करती हूँ।' यह उस विश्वास और जज्बे की कहानी है जो हर कठिनाई से लड़ना जानता है। महक ने न सिर्फ चलना सीखा, बल्कि उड़ने का हौसला भी हासिल किया।

विश्वभर के 4 लाख 48 हजार से अधिक दिव्यांगों को दिव्यांगता से मुक्त निःशुल्क सुधारात्मक शल्य चिकित्सा

छः साल बाद जमीन पर पहला कदम

महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले के रोहिनखेड़ा गांव की मानवी दलवी का जन्म प्री–मेच्योर बेबी के रूप में हुआ था। जन्म के साथ ही वह अपनी भावी जिंदगी में एक चुनौती भी लेकर आई – उसके दोनों पांव घुटनों से मुड़े थे और पंजे तिरछे। उम्र बढ़ने के साथ वह न तो उठ पाती, न ही ठीक से चल पाती। खेलना, दौड़ना, स्कूल जाना – ये सब उसे नसीब ही नहीं हुआ।

उसके पिता योगेश दलवी बस चालक हैं और मां अल्का देवी गृहणी। दोनों ने 6 वर्षीय बेटी के इलाज के लिए महाराष्ट्र से पुणे तक हर संभव प्रयास किया। न्यूरोलॉजिस्ट से लेकर ऑर्थोपेडिक सर्जनों तक, दिमाग से लेकर कमर और पांव तक की हर जाँच करवाई गई, लेकिन कहीं से राहत नहीं मिली। हर दरवाजे से नाउम्मीद लौटी। एक दिन पुराने परिचित से मुलाकात हुई, जिसने साल 2004 में नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर में निःशुल्क पोलियो सुधारत्मक ऑपरेशन करवाया था और वे पूरी तरह ठीक हो गए थे। उन्हीं की सलाह पर सोशल मीडिया के जरिए जानकारी लेकर दलवी परिवार अप्रैल 2024 में मानवी को लेकर संस्थान पहुंचा।

संस्थान की विशेषज्ञ मेडिकल टीम ने बारीकी से जाँच कर उपचार की योजना बनाई। पहला ऑपरेशन 20 अप्रैल को तो दूसरा 1 जून को सम्पन्न हुआ। इसके कुछ दिन बाद मानवी को विशेष कैलिपर्स और जूते पहनाकर फिजियोथेरेपी दी गई। करीब चार महीनों के उपचार और निरंतर देखभाल के बाद वो पल आया, जब मानवी ने पहली बार बिना सहारे के जमीन पर अपना पहला कदम रखा। जो उसके लिए स्वप्न जैसा था। उस क्षण उसके होठों पर जो मुस्कान उभरी उसने पूरे परिवार की तकलीफों को भी मिटा दिया। अब मानवी अपने पैरों पर खड़ी हो सकती है, चल सकती है, और पहले से कहीं अधिक आत्मविश्वास से भरी हुई है। उसके माता–पिता की आंखों में अब चिंता नहीं, बल्कि खुशी और संतोष है।

रूसी तकनीक इलीजियारोव से अंकित को मिली नई जिन्दगी

अंकित एक छोटा सा प्यारा सा बच्चा है। जन्म से ही उसके पैर अंदर की तरफ मुड़े हुए थे। जिसके कारण उसकी जिंदगी बेहद चुनौतीपूर्ण थी। इन मुड़े हुए पैरों के कारण न वो स्कूल जा पाता था और न ही बच्चों के साथ खेल पाता था। उसके माता–पिता ने उसका उपचार कराने के लिए कौन–कौन से जतन नहीं किए , लेकिन हर जगह से उन्हें निराशा हाथ लगी। कोई भी डॉक्टर अंकित को सकलांग जीवन नहीं दे सका। एक दिन उसके माता–पिता को नारायण सेवा संस्थान के बारे में पता चला। जिसके बाद वो तुरंत ही अंकित को लेकर ट्रेन पर बैठ गए। अगले दिन उदयपुर स्थित संस्थान पहुंचे। जहाँ डॉक्टरों के गहन परीक्षण के बाद उसका उपचार शुरू हुआ। बिना ऑपरेशन किये रूसी इलिजारोव तकनीक से कई महीनों तक उसका उपचार चलता रहा। अब अंकित पूर्णतः स्वस्थ्य है, उसके पैर सीधे हो चुके हैं। वह अपने पैरों पर खड़ा हो लेता है। चल–फिर लेता है और साइकिल भी चला लेता है। अब अंकित तैयार है एक नई जिंदगी जीने के लिए।

संघर्ष पर भागीरथ के जीत की मोहर

राजस्थान के बीकानेर जिले की श्रीडूंगरगढ़ तहसील से चालीस किलोमीटर दूर ,क छोटी सी ढा.णी मूंडसर का 15 वर्षीय भागीरथ मुंड (जाट) जन्मजात शारीरिक विकृति लेकर दुनिया में आया। उसके दा, हाथ की चारों उंगलियां पंजे से पूरी तरह चिपकी हुई थीं। पंद्रह वर्षीय आठवीं के इस छात्र की इस विकृति ने न केवल हाथ को बल्कि उसके आत्मविश्वास को भी जकड़ लिया था। ढाणी के आंगन में बच्चों की टोली जब खेलती –खिलखिलाती, भागीरथ अक्सर कोने में बैठकर अपना हाथ कपड़ों में छिपा रो लेता। क्योंकि प्रायः बच्चे उसका मजाक उड़ाते, ताने कसते और उसकी मासूम हंसी को चुरा लेते।

माता-पिता की व्यथा- पिता मोहन राम मुंड, अपनी 30 बीघा जमीन पर दिन–रात पसीना बहाते हैं। मां भागवंती देवी पशुपालन और खेती–बाड़ी में पति का बराबर का साथ निभाती हैं।

इलाज और टूटती उम्मीदें - बीकानेर के सरकारी अस्पताल में दिखाने पर डॉक्टरों ने सर्जरी की सलाह दी, लेकिन साफ कह दिया – "हाथ सही होगा या नहीं, इसकी गारंटी नहीं है।" उपचार के लि, जयपुर और जोधपुर भी परिवार गया, मगर हर जगह से वही निराशाजनक उत्तर मिला –'उंगलियां खुलेंगी या नहीं, हम नहीं कह सकते।' परिवार की उम्मीदें टूटती रहीं।

उम्मीद की किरण- तभी गांव के ही एक व्यक्ति ने मुंड परिवार से कहा–'मेरे भानजे के पांव पूरी तरह पीछे की ओर मुड़े थे। लेकिन उदयपुर के नारायण सेवा संस्थान में निःशुल्क सर्जरी से वह अब बिल्कुल ठीक हो गया है। 'यह सुनकर भागीरथ के परिवार की बुझी हुई आंखों में फिर से उम्मीद की चमक लौटी, वे 29 जून 2024 को पहली बार उदयपुर स्थित संस्थान पहुँचे। वहां डॉ. बी.एल. शिंदे ने गहन जांच की और दृढ़ स्वर में भागीरथ से कहा –"तुम्हारा हाथ पूरी तरह ठीक होगा। यह शब्द परिवार के लि, मानो वरदान थे और बाद में साबित भी हुं।

संघर्ष और जीत का सफर- 7 जुलाई 2024 को पहला ऑपरेशन हुआ। दूसरा 6 मार्च व तीसरा ऑपरेशन 3 जून 2025 को हुआ।

भागीरथ आज गर्व से मुस्कुराता है और कहता है- अब मुझे अपना हाथ छुपाने की कोई जरूरत नहीं। संस्थान का बहुत–बहुत धन्यवाद।"

दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह
43 विवाह में 2459 जोड़े बंधे

दिनांक : 30-31 अगस्त, 2025
स्थान : लियों का गुड़ा, बड़ी उदयपुर (राज.)

संस्थान के 44 वें दो दिवसीय नि:शुल्क सामूहिक दिव्यांग विवाह समारोह में 51 बेटियों ने भावी गृहस्थी के सतरंगी सपने बुनते हुए अपने जीवन साथी के साथ सात फेरे लिए। इन 102 वर - वधुओं के हस्त मिलाप के साक्षी बने देश -विदेश के कन्यादानी, धर्म माता -पिता और सैकड़ों मेहमान। संस्थान अध्यक्ष 'सेवक' प्रशांत भैया ने कहा कि दिव्यांगों के सशक्तिकरण के लिए संस्थान संकल्पबद्ध है। क्योंकि इससे समाज और राष्ट्र की संपन्नता और विकास की संभावनाएं जुड़ी है। संस्थान संस्थापक पद्मश्री अलंकृत पू. गुरूदेव कैलाश जी 'मानव' व सह संस्थापिका श्रीमती कमला देवी जी ने नवयुगलों को आशीर्वाद देते हुए उनके सुखद दांपत्य जीवन की मंगल कामनाएं की।

नारायण कृत्रिम अंग एवं कैलीपर्स वर्कशॉप

संस्थान की आधुनिक सर्वसुविधा युक्त कार्यशाला जहां अनुभवी आर्थोटिस्ट एवं प्रोस्थेटिस्ट टीम द्वारा बनाये जाते हैं आधुनिक कृत्रिम अंग एवं कैलीपर्स

अब तक 37967 कृत्रिम अंग निर्माण एवं वितरण
392919 लाख से अधिक कैलीपर्स निर्माण व वितरण

हादसे के बाद आत्मनिर्भरता की राह : रूपेश

रूपेश पंवार (30) की जिंदगी भी आम लोगों की तरह सपनों से भरी और आगे बढ़ने की उम्मीदों की ललक से चल रही थी। लेकिन तीन साल पहले एक दर्दनाक मोड़ ने सब कुछ बदल दिया। महाराष्ट्र के यवतमाल जिले के रूपेश सड़क हादसे का शिकार हो गए। जख्म इतने गहरे थे कि डॉक्टरों को उनका दायां पैर घुटने से ऊपर तक काटना पड़ा। उनके लिए यह घटना किसी वज्रपात से कम नहीं थी। आत्मनिर्भर जीवन दूसरों पर निर्भर हो गया। हर छोटा–बड़ा काम किसी की मदद के बिना अब संभव नहीं था। आत्मविश्वास टूटने लगा और जीवन की दिशा धुंधली हो गई। अवसाद और कठिनाइयों के बीच एक दिन रूपेश को सोशल मीडिया से नारायण सेवा संस्थान के बारे में जानकारी मिली कि वह दिव्यांगों को निःशुल्क कृत्रिम अंग प्रदान कर, उन्हें फिर से अपने पैरों पर खड़ा करता है। यह जानकारी उनके लिए अंधेरे में प्रकाश की एक किरण थी। वे तुरंत उदयपुर स्थित संस्थान पहुंचे। संस्थान में महज दो दिनों के भीतर उनके पैर का माप लिया गया और उन्हें कृत्रिम पैर पहनाया गया। जब उन्होंने पहली बार नारायण कृत्रिम पांव के सहारे कदम बढ़ाया, तो उनकी आँखों में चमक थी और होंठों पर शब्द थे –'अब मैं भी दूसरों की तरह अपने पैरों से चल सकता हूँ।'

संस्थान ने रूपेश को न सिर्फ चलने भर की ताकत दी, बल्कि आत्मनिर्भरत की राह भी दिखाई। संस्थान में निःशुल्क कौशल प्रशिक्षण केंद्र के माध्यम से उन्होंने मोबाइल रिपेयरिंग का कोर्स शुरू किया। धीरे–धीरे उन्होंने इस तकनीक में दक्षता प्राप्त की और अब वे अपने गाँव जाकर खुद की मोबाइल रिपेयरिंग की दुकान खोल परिवार को आर्थिक मजबूती प्रदान करने की योजना पर काम कर रहे हैं।

दिव्यांग भाई-बहन को आर्थिक आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास

आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित डिजिटल कक्षाओं में मोबाईल रिपेयरिंग, कम्प्यूटर ट्रेनिंग, सिलाई एवं हस्तशिल्प का प्रशिक्षण

अब तक 3366 जन बनें स्वावलम्बी

सिलाई प्रशिक्षण

1938 दिव्यांगों ने बढ़ाया जीवन की ओर नया कदम

संस्थान की ओर से पिछले दिनों मेरठ, पटना एवं लखनऊ में शिविर आयोजित कर उन भाई-बहिनों को राहत और आगे बढ़ने का हौसला दिया गया, जिन्होंने विभिन्न हादसों में अपने हाथ-पैर खो दिए थे। इन्हें अत्याधुनिक कृत्रिम अंग प्रदान करने के साथ माप भी लिए गए ताकि आगामी शिविरों में वे अपनी रुकी हुई जिन्दगी को गतिमान बना सकें। आर्थिक दृष्टि से कमजोर दिव्यांगों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी यह एक सार्थक प्रयास है।

मेरठ

रोटरी क्लब शिवम् के सहयोग से गढ़ रोड, स्थित ला–फ्लोरा रिसोर्ट में 22 जून को आयोजित निःशुल्क दिव्यांग ऑपरेशन जांच चयन और नारायण मोड्यूलर आर्टिफिशियल लिंब व कैलीपर्स माप शिविर में 317 दिव्यांगजन लाभान्वित हुए। शिविर का उद्‌घाटन मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश सरकार में ऊर्जा राज्यमंत्री श्री राजेन्द्र जी तोमर ने किया। विशिष्ट अतिथि क्षेत्रीय विधायक श्री अमित अग्रवाल थे। आरएसएस के सह विभाग संचालक श्री विनोद भारती, पूर्व सांसद श्री राजेंद्र अग्रवाल, एमएलसी श्री धर्मेन्द्र भारद्वाज व श्री कमलदत्त भी मंचासीन थे। अध्यक्षता मेयर श्री हरिकांत अहलूवालिया ने की। प्रारंभ में संस्थान ट्रस्टी–निदेशक श्री देवेन्द्र चौबीसा ने अतिथियों का स्वागत– अभिनंदन किया और संस्थान के निःशुल्क सेवा प्रकल्पों की जानकारी दी। शिविर में संस्थान के प्रोस्थेसिस तकनीशियन एवं चिकित्सकों ने शिविर में आए दिव्यांगों की जांच कर 150 का कृत्रिम हाथ–पैर तथा 130 के लिए कैलीपर बनाने के लिए माप लिया। 37 दिव्यांगों का पोलियो सुधारात्मक सर्जरी के लिए चयन किया गया। शिविर प्रभारी श्री हरिप्रसाद लड्ढा थे। रोटरी क्लब के प्रोजेक्ट चेयरमैन रो.प्रतीक जैन ने अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि दिव्यांगजन को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना ही इस शिविर के आयोजन का उद्देश्य है। इस अवसर पर रोटरी क्लब अध्यक्ष श्री सौरभ अरोड़ा, सचिव श्रीमती वर्षा जैन सहित बड़ी संख्या में रोटेरियन मौजूद थे।

पटना

दानापुर (बिहार) में मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल श्री आरिफ

मोहम्मद खान ने 29 जून को शिविर का उद्घाटन करते हुए कहा कि–'नारायण सेवा संस्थान हमारी उस संस्कृति को आगे बढ़ा रहा है जिसमें नर सेवा को ही नारायण की सेवा माना गया है।' उन्होंने शिविर में उपस्थित करीब 470 दिव्यांगों से संवाद किया और उन्हे आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने को कहा। शिविर के विशिष्ट अतिथि भाजपा के प्रदेश महामंत्री एवं दीघा के विधायक डॉ. संजीव चौरसिया, पद्मश्री विमल जैन एवं समाज सेवी श्री विजय जैन थे। संस्थान के ट्रस्टी – निदेशक श्री देवेंद्र चौबीसा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान की स्थापना से अब तक के सेवाकार्यो पर प्रकाश डाला। शिविर में 1150 से अधिक दिव्यांगजन की जांच कर 470 को कृत्रिम हाथ–पैर लगाए। इन दिव्यांगों ने बाद में कृत्रिम अंग पहिनकर मंच पर राज्यपाल को सलामी भी दी। शिविर प्रभारी श्री हरिप्रसाद लड्ढ़ा, श्री रमेश शर्मा व श्री संदीप भटनागर थे। संचालन महिम जैन ने किया।

लखनऊ

उत्तर प्रदेश सरकार के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री जयवीर सिंह ने लखनऊ में आयोजित निःशुल्क कृत्रिम अंग व कैलीपर माप शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कहा कि दुर्घटनाओं में अपने हाथ पैर खो देने वाले भाई–बहिनों को दानवीरों के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान कृत्रिम अंग प्रदान कर उन्हें आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने का जो हौसला दे रहा है, वह प्रशंसनीय है। इस दिशा में राज्य सरकार भी पूरी प्रतिबद्धता के साथ काम कर रही है।

अपनी प्रतिक्षा में

मेक ए चेंज फाउंडेशन यूके , गोल्डन जुबली और स्वामी नारायण मंदिर निल्सडन यूके के सौजन्य से गोमती नगर के एक रिसोर्ट में आयोजित इस शिविर में 165 दिव्यांगों का नारायण अत्याधुनिक कृत्रिम अंग व 120 के लिए कैलीपर बनाने का माप लिया गया जबकि 83 दिव्यांगों का पोलियो एवं अस्थि–विकृत सुधारात्मक सर्जरी के लिए चमन किया गया।

संस्थान के ट्रस्टी–निदेशक श्री देवेंद्र चौबीसा ने अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में सर्वश्री महेश अग्रवाल, संजय खन्ना, अमित त्रिपाठी व श्रीमती प्रतिमा श्रीवास्तव मंचासीन थे। संस्थान के पीआरओ श्री भगवान प्रसाद गौड़ ने संस्थान की सेवा यात्रा की जानकारी दी। संचालन श्रीहरि प्रसाद लड्ढा ने किया।

783 दिव्यांगों को मिली मकसदपूर्ण जिंदगी

मानव सेवा और दिव्यांग सशक्तिकरण के लिए समर्पित नारायण सेवा संस्थान द्वारा हैदराबाद के मिनर्वा गार्डन्स, चंपापेट में 17 अगस्त को नारायण लिम्ब एवं कैलिपर्स फिटमेंट शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में तेलंगाना, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए 783 दिव्यांगजनों को 851 कृत्रिम हाथ–पैर और कैलिपर्स निशुल्क प्रदान किए गए।

शिविर का शुभारंभ राष्ट्र संत पूज्य ललितप्रभ सागर जी महाराज सा एवं पूज्य आचार्य भक्तिरत्न सुरिश्वर जी महाराज सा के मंगल आशीर्वाद से हुआ। आचार्यो ने अपने आशीर्वचन में कहा कि "नारायण सेवा संस्थान न केवल दिव्यांगजनों को कृत्रिम अंग प्रदान कर रहा है, बल्कि उनके खोए आत्मविश्वास को भी पुनर्जीवित कर रहा है।" हम संतजन संस्थापक कैलाश मानव और अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल के साथ समस्त सेवाभावियों की मुक्त कंठ से प्रसंशा करते है।

दीप प्रज्वलन समारोह में जेसीआई जोन प्रेसिडेंट चतुर्वेदी वुतुकूरु, जेसीआई बंजारा प्रेसिडेंट सुरेश मलानी, मुंबई शाखा प्रेसिडेंट महेश अग्रवाल, पिरामिड संस्थान से माधवी दंतरिका, भास्कर एवं वेणुगोपाल, संरक्षक अलका– अभय चौधरी, खुशी की अध्यक्ष मंजुला कल्याण सहित संस्थान की निदेशक वंदना अग्रवाल, ट्रस्टी देवेंद्र चौबिसा, भगवान प्रसाद गौड़, रोहित तिवारी और आश्रम प्रभारी महेंद्र सिंह रावत उपस्थित रहे।

सभी अतिथियों ने लाभांवित दिव्यांगजनों से संवाद किया, उनकी आपबीती सुनी और कृत्रिम अंगों की उपयोगिता पर संतोष व्यक्त किया। दिव्यांगजन ट्रेनिंग के बाद बैडमिंटन और फुटबॉल जैसे खेलों में भी शामिल हुए।

संस्थान की निदेशक वंदना अग्रवाल ने बताया कि "पिछले अप्रैल माह में आयोजित चयन शिविर में आए 1100 रोगियों में से 783 दिव्यांगजनों को चयनित किया गया था। आज वे सभी जर्मन टेक्नोलॉजी से बने नारायण लिम्ब और कैलिपर्स पाकर आत्मनिर्भर जीवन की नई शुरुआत कर रहे हैं।"

कार्यक्रम में दिव्यांगों ने कृत्रिम अंग पहनकर परेड की और डॉक्टर्स ने उन्हें चलने की ट्रेनिंग एवं रखरखाव संबंधी जानकारी दी। शिविर में संस्थान की 70 सदस्यीय टीम व कॉग्निजेंट कंपनी सहित 70 स्वयंसेवकों ने सेवा दी। दिनभर रोगियों व परिजनों के लिए निशुल्क भोजन की व्यवस्था रही। आभार देवेंद्र चौबिसा ने तथा संयोजन महिम जैन ने किया।

संस्थान की सेवाएँ–1985 से स्थापित नारायण सेवा संस्थान अब तक 40,000 से अधिक कृत्रिम अंग निशुल्क प्रदान कर चुका है। संस्थापक श्री कैलाश मानव को मानव सेवा कार्यो हेतु पद्मश्री अलंकरण प्राप्त हो चुका है, वहीं हाल ही में वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने उन्हें सामुदायिक सेवा एवं सामाजिक उत्थान सम्मान प्रदान किया। संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल को भी 2023 में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

संस्थान मेडिकल, शिक्षा, कौशल विकास एवं खेल अकादमी के माध्यम से लाखों दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर बनाकर समाज की मुख्यधारा से जोड़ रहा है। हैदराबाद शिविर के माध्यम से संस्थान ने तेलंगाना के दिव्यांगों के जीवन को नई दिशा देने का संकल्प लिया है।

गरीब व निराश्रित बच्चों को निःशुल्क डिजिटल शिक्षाः नारायण चिल्ड्रन एकेडमी

संस्थान में 2015 में नारायण चिल्ड्रन एकेडमी (NCA) की स्थापना कर उन बच्चों के सर्वांगीण विकास की यात्रा शुरू की गई, जो गरीबी और संसाधनों के अभाव में शिक्षा से वंचित रहते हैं। संस्थान के सेवामहातीर्थ (लियों का गुड़ा –उदयपुर) में संचालित अंग्रेजी माध्यम का यह स्कूल बच्चों को मूल्य–आधारित (वैल्यू बेस) शिक्षा के साथ–साथ वे तमाम सुविधाएं उपलब्ध करवाता है, जो शिक्षण के लिए विश्वस्तरीय कही जा सकती हैं।

विद्यालय में आसपास के ग्रामीण क्षेत्र, दिहाड़ी मजदूरों और निर्धन परिवारों के बच्चे निःशुल्क शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। ये बच्चे ऐसे परिवारों से आते हैं, जिनके अभिभावक स्वयं भी शिक्षा से वंचित रहे, उनका अपना परिवेश ही कुछ ऐसा था। लेकिन आज वे अपने बच्चों को साफ–सुथरी यूनिफॉर्म में डिजिटली एज्यूकेशन हासिल करते देख बेहद खुश हैं। उन्हें निःशुल्क यूनिफॉर्म, स्टेशनरी व अन्य अध्ययन सामग्री, आवगमन के लिए वाहन सुविधा, स्वास्थ्य की नियमित जांच, व्यवस्थित खेल मैदान व उपकरणों के साथ प्राकृतिक व समावेशी शैक्षिक वातावरण प्राप्त होता है। इस समय विभिन्न कक्षाओं में 687 बच्चे अध्ययनरत हैं। जो प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं के मार्गदर्शन में अत्याधुनिक शिक्षा प्राप्त कर अपने व समाज के सुखद भविष्य का निर्माण कर रहे हैं।

'रक्षा बंधन, रिश्तों का अभिनंदन'

नारायण सेवा संस्थान में रक्षाबंधन का पर्व आनंद, मस्ती, संगीत और संस्कारों के संग मनाया गया। नन्हीं बहनों ने भाइयों की कलाई पर राखी बाँधी, तिलक लगाया और मिठाई खिलाकर प्यार जताया।ओर भाइयों ने उपहार के साथ आशीष प्रदान किया नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के छात्र, छात्राओं ने एवं आवासीय विद्यालय के मुखबधिर, प्रज्ञाचक्षु और विशेष बच्चों की मासूम मुस्कान ने इस पावन पर्व को और भी रोशन कर दिया। निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल एवं पलक जी की उपस्थिति में यह उत्सव भाई–बहन के रिश्ते की अमिट छाप छोड़ गया। संस्थान परिवार ने प्रार्थना की ये बच्चे जीवन की हर राह पर सफलता के सितारे बनकर चमकें।

'राखी के धागों में बंधा है, अपनेपन का सार'
'भाई बहिन का प्यारा रिश्ता, खुशियां रहें अपार।।'

WORLD OF HUMANITY

4th Floor

- हॉस्पीटल, वार्ड, 2 थियेटर (ओटी) एवं आईसीयू

3rd Floor

- वार्ड एवं चाइल्ड पार्क

2nd Floor

- वार्ड एवं फिजियोथेरेपी

1st Floor

- अतिथि-कुलाचार्य गृह एवं अन्नपूर्णा

Lower Basement

- पार्किंग और इक्विपमेंट प्लांट रूम

Upper Basement

- भंडार गृह

नव निर्मित भवन

प्रस्तुत है अनन्त सम्भावनाओं से परिपूर्ण दिव्यांगों के लिए

5th Floor

- शिक्षण एवं कौशल

6th Floor

- सेवालय क्षेत्र

7th Floor

- सेवालय क्षेत्र

Terrace

- सूर्य दर्शन-आंगन

Lower Ground Floor

- फेब्रीकेशन यूनिट, फार्मेसी एवं वर्कशॉप

Upper Ground Floor

- ओपीडी एवं स्वागत कक्ष

एक ईंट मानवता के नाम

ताम्र ईंट
पट्टिका पर नाम
रोगी बेड पर
₹1,00,000

सेवा ईंट
मानवता की दीवार पर
नाम इमारत में
₹51,000

मानवता ईंट
करुणा भाव
से स्वागत करें
₹21,000

Donate via UPI
Google Pay PhonePe
narayanseva@sbi

दिव्यांगजनों को मिल रही नई जिन्दगी

क्र.सं.	कार्यक्रम	दिनांक	सिटी	राज्य
1	श्राद्ध पक्ष	07.09.2025	गया	बिहार
2	नारायण लिबं एवं कैलीपर्स फिटमेन्ट शिविर	07.09.2025	इंदौर	मध्य प्रदेश
3	नारायण सेवा संस्थान वूमेन क्रिकेट कप -(न्यूयॉर्क-यू. एस . ए .)	14.09.2025	न्यूरोक	यूएसए
4	नारायण लिबं एवं कैलीपर्स मेजरमेन्ट शिविर	14.09.2025	देहरादून	उत्तराखण्ड
5	नारायण लिबं एवं कैलीपर्स फिटमेन्ट शिविर	21.09.2025	उदयपुर	उत्तर प्रदेश
6	शारदीय नवरात्री लाइव कथा -शुभ चौनल लाइव -2025 (प्रति 7 दिन कथाएं -समय दोपहर 1 से सांय 4 बजे तक	22.09.2025	उदयपुर	राजस्थान
7	नारायण लिबं एवं कैलीपर्स मेजरमेन्ट शिविर	28.09.2025	बड़ौदा	गुजरात
8	शारदीय नवरात्रि महाष्टमी	30.09.2025	उदयपुर	राजस्थान
9	श्रीनाथ जी दर्शन,आत्मीय स्नेह मिलन एवं भामाशाह सम्मान समारोह	05.10.2025	उदयपुर	राजस्थान
10	नारायण लिबं एवं कैलीपर्स फिटमेन्ट शिविर	12.10.2025	लखनऊ	उत्तर प्रदेश
11	नारायण लिबं एवं कैलीपर्स मेजरमेन्ट शिविर	02.11.2025	भावनगर	गुजरात
12	नारायण लिबं एवं कैलीपर्स फिटमेन्ट शिविर	16.11.2025	अहमदाबाद	गुजरात
13	नारायण लिबं एवं कैलीपर्स मेजरमेन्ट शिविर	23.11.2025	बैंगलोर	कर्नाटक
14	इन्टरनेशलन डिसेब्लिटी एम्पावरमेन्ट अवार्ड सेरेमनी दिल्ली	29.11.2025	दिल्ली	दिल्ली
15	नारायण लिबं एवं कैलीपर्स फिटमेन्ट शिविर	30.11.2025	देहरादून	उत्तराखण्ड
16	वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी उद्घाटन समारोह-उदयपुर	07.12.2025	उदयपुर	राजस्थान
17	नारायण लिबं एवं कैलीपर्स फिटमेन्ट शिविर	14.12.2025	भुनाव	गुजरात
18	नारायण लिबं एवं कैलीपर्स फिटमेन्ट शिविर	21.12.2025	बड़ौदा	गुजरात
19	नारायण लिबं एवं कैलीपर्स मेजरमेन्ट शिविर	28.12.2025	पूणे	महाराष्ट्र

आत्मनिर्भरता की ओर..

भारत की महामहिम राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटील ने नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के संस्थापक चेयरमैन पूज्य कैलाश जी 'मानव' को व्यक्तिगत गुणों के लिए नागरिक अलंकरण पद्मश्री से सम्मानित किया

संसद भवन नई-दिल्ली के बालयोगी सभागार में केन्द्रीय वित्तमंत्री प्रणव मुखर्जी से राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार ग्रहण करते पूज्य कैलाश जी 'मानव'

दिव्यांगजन सेवा के लिए प्रशांत भैया को राष्ट्रीय अवार्ड राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने किया सम्मानित

पूज्य कैलाश जी 'मानव' संस्थापक चेयरमैन को विकलांगों की उत्कृष्ट सेवाओं हेतु व्यक्तिगत श्रेणी का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान करते हुए महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम सा.

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ एवं पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियोग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000 / —	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000 / —
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000 / —	13 ऑपरेशन के लिए	52,500 / —
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000 / —	5 ऑपरेशन के लिए	21,000 / —
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000 / —	3 ऑपरेशन के लिए	13,000 / —
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000 / —	1 ऑपरेशन के लिए	5,000 / —

दुखियों के चेहरो पर लायें खुशियां

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
कृत्रिम हाथ / पैर	10,000 / —	30,000 / —	50,000 / —	1,10,000 / —
तिपहिया साईकिल	5000 / —	15,000 / —	25,000 / —	55,000 / —
व्हील चेयर	4000 / —	12,000 / —	20,000 / —	44,000 / —
कैलिपर	2000 / —	6,000 / —	10,000 / —	22,000 / —
वैशाखी	500 / —	1,500 / —	2,500 / —	5,500 / —

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मित्ति

(हर वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनो समय भोजन सहयोग राशि	37,000 / —
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30,000 / —
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15,000 / —
नाश्ता सहयोग राशि	7,000 / —

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 7,500 / —	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 22,500 / —
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 37,500 / —	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 75,000 / —
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 1,50,000 / —	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 2,25,000 / —

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80जी के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार कर में छूट के योग्य है।

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के सपनों को करें साकार

शिक्षा से वंचित आदिवासी क्षेत्र के बच्चों को शिक्षित करने में करें मदद	
1 एक बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	11,000/–
5 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	55,000/–
20 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	2,20,000/–

निर्धन एवं दिव्यांग बन्धु बहिनों के सामूहिक विवाह आयोजन में सहभागी बनें ऐसी प्रार्थना है

कन्यादान (एक दिव्यांग कन्या)	1,00,000/–
आंशिक कन्यादान (एक दिव्यांग कन्या)	51,000/–
पाणिग्रहण संस्कार (प्रति जोड़ा)	21,000/–
श्रृंगार सहयोग (प्रति जोड़ा)	11,000/–
मेहंदी और हल्दी रस्म (प्रति जोड़ा)	5,100/–

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें- अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पैन नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

STATE BANK OF INDIA	-H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	-Madhuban	ICIC0000045	004501000829
PUNJAB NATIONAL BANK	-KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
UNION BANK OF INDIA	-UdaipurMain	UBIN0531014	310102050000148

भारतीय स्टेट बैंक - ए/सी नंबर: 51004703238 स्विफ्ट-कोड: SBINBBJ12 IFSC CODE: SBIN0031209

एफसीआरए रजिस्ट्रेशन नंबर: 125690046 शाखा कोड: 31209

UPI narayanseva@sbi

संस्थान को **paytm** एवं **UPI** के माध्यम से दान देने हेतु इस **QR Code** को स्कैन करें अथवा अपने पेमेंट एप में **UPI Address** डालकर आसानी से सेवा भेजे।

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

टेलीफोन नं. : +91-294-6622222

वाट्सअप : +91-7023509999

हमारा पता:

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

विभिन्न चैनलों पर संस्थान के सेवा कार्य

भारत में संचालित

- **आस्था** 9.00 am - 9.20 am, 7.40 pm - 7.55 pm
- **संस्कार** 7.45 pm - 8.05 pm
- **सत्संग** 7.00 pm - 7.20 pm

विदेश में संचालित (हिन्दी)

- **आस्था (यू.के/यू.एस.ए.)** 8.30 am - 8.45 am
- **जी.टी.वी. (यू.के/यू.एस.ए./कनाडा अफ्रीका/एशिया पेसिफिक)** 7.30 am - 7.45 am

जो रूक गये
जीवन में
उनको चलायें
देवें
कृत्रिम
अंग का
उपहार
Donate Now
एक कृत्रिम
अंग सहयोग
10,000/-
हमारा पता :
नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत
Tel: +91-294-6622222, 2666666 | +91-7023509999
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
for more life changing stories visit our website www.narayanseva.org